



ॐ
॥ श्री गायत्री कवच ॥
॥ मङ्गल करनिं गायत्री सुखधाम ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री गायत्री कवच ॥

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महादेवीं वेदमातारमीश्वरिम्।
हंसवाहां त्रिनयनां वरदाभयदायिनीम्॥
श्वेतवस्त्रां चतुर्बाहुं पुस्तकाक्षमलाधराम्।
गायत्रीं सर्वलोकानां जननीं प्रणमाम्यहम्॥

अथ कवचम्

ॐ गायत्री मे शिरः पातु, सावित्री ललाटकम्।
ब्रह्माणी नेत्रयुगलं, वेदमाता श्रुती मम॥
नासिकां मे जगद्धात्री, मुखं वाणी सरस्वती।
जिह्वां मन्त्रमयी पातु, कण्ठं मे परमेश्वरी॥
स्कन्धौ मे शक्तिरूपा च, भुजौ मे वरदायिनी।
करौ मे कर्मसिद्ध्यर्थं, पातु देवि दयानिधिः॥
हृदयं भक्तिदा पातु, बुद्धिं मे ज्ञानदायिनी।
नाभिं मे विश्वजननी, कटिं मे कमलासना॥
ऊरू मे धर्मसंरक्षी, जानुनी पुण्यवर्धिनी।
जङ्घे मे तेजसां दात्री, पादौ मे पापनाशिनी॥
पूर्वे मां वेदमाता च, आग्नेये भुवनेश्वरी।
दक्षिणे ब्रह्मविद्या च, नैऋत्ये दुःखनाशिनी॥
पश्चिमे परमाशक्तिः, वायव्ये विश्वपालिनी।
उत्तरे ज्ञानरूपा च, ऐशान्ये मोक्षदायिनी॥
ऊर्ध्वे मां परमज्योतिः, अधस्तात् करुणामयी।
सर्वतः पातु मां नित्यं, गायत्री विश्वमातरः॥
गृहे, मार्गे, वने, दुर्गे,
जले, स्थले, नभस्तले।
सर्वकाले सदा पातु,
गायत्री परमेश्वरी॥

मन्त्रजपे, हवने, पूजायां,
ध्याने, योगे, तपस्यपि।
मम रक्षां सदा कुर्यात्,
वेदमाता सनातनी॥

फलश्रुति:

यः पठेत् श्रद्धया नित्यं,
गायत्री कवचं शुभम्।
तस्य बुद्धिर्विवृद्धिः स्यात्,
भक्तिर्भवति शाश्वती॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं,
शान्तिं सौख्यं यशः श्रियम्।
गायत्रीप्रसादेनैव,
लभते नात्र संशयः॥

समर्पण

हे वेदमाता गायत्री!
आप मेरी बुद्धि, मन, वचन और कर्म की रक्षा करें।
मुझे सत्य, धर्म, करुणा, विवेक और भक्ति के मार्ग पर सदैव अग्रसर रखें।
मेरे जीवन से अज्ञान, भय और नकारात्मकता का नाश करें तथा अपने
दिव्य प्रकाश से मेरा और समस्त जगत का कल्याण करें।

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

॥ ॐ श्री गायत्र्यै नमः ॥